Dr. Usha Choudhary

B.A. Part-I

PERSONALITY (व्यक्तित्व)

1) Definition →

व्यक्तित्व एक जटिल concept है जिसकी एक भी परिभाषा ऐसी नहीं है, जिससे सभी मनोवैज्ञानिक सहमत हों। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को दो भिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित करने का प्रयास किया है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने Personality के बाहरी पक्ष जैसे - शारीरिक रचना, रूपरेखा, रंगरूप आदि को ध्यान में रख कर और कुछ ने व्यक्ति के आंतरिक पक्ष जैसे - मानसिक रचना (Mental make), स्वभाव, बौद्धिक योग्यता, आदि को ध्यान में रखकर व्यक्तित्व को परिभाषित करने का प्रयास किया है। परन्तु कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्ति के दोनों पक्षों को ध्यान में रखकर Personality को परिभाषित किया है। कुछ परिभाषाएं इस प्रकार है -

① G.W. Allport (1961) की परिभाषा → "व्यक्तित्व व्यक्ति के अन्तर्गत उन मनोदैहिक शीलगुणों का गत्यात्मक संगठन है, जो उसके विशिष्ट व्यवहार एवं विचार को निर्धारित करते हैं।"

② Sanford, (1961) की परिभाषा → "Sanford ने अपनी परिभाषा में कहा है कि "मानव की टिकाऊ विशेषताओं का अपूर्व संगठन ही व्यक्तित्व है।"

③ Atkinson (1998) के अनुसार - "सम्पूर्ण वातावरण के प्रति अपूर्व समायोजन को निर्धारित करने वाली व्यक्तिगत विशेषताओं का संगठन या प्रतिमान ही व्यक्तित्व है।

④ Baron (बैरन, 2003) के अनुसार → "व्यक्तित्व का तात्पर्य व्यक्ति के अपूर्व एवं अपेक्षाकृत स्थायी व्यवहार, प्रतिरूपों, विचारों तथा भावों से है।"

वर्तमान स्थिति यह है कि मनोविज्ञान के Cognitive दृष्टिकोण तथा सामाजिक दृष्टिकोण के बढ़ते हुए कदम का प्रभाव Psychology के अन्य concepts के साथ-साथ Personality पर भी पड़ता है। जिसके परिणाम स्वरूप आज Personality के तीन आवश्यक संघटक (भाग) (Constituents) माने जाते हैं। personality का पहला भाग वह है जिसमें व्यक्ति स्वयं अवगत रहता है। इसको चेतन (Conscious) कहते हैं। दूसरा भाग वह है जिसकी चेतना व्यक्ति को नहीं रहती है. इसे अचेतन (unconscious) व्यक्तित्व कहते हैं। तीसरा भाग वह है जो वस्तुनिष्ठ (objective) होता है और जिसका निरीक्षण दूसरे लोग करते हैं। अतः इस दृष्टिकोण से व्यक्तित्व की वही परिभाषा सर्वमान्य एवं सामाजिक होगी जो

Personality के इन तीनों भागों की व्याख्या कर सके। अतः इस दृष्टिकोण से Personality की यह परिभाषा अधिक सफल प्रतीत होती है कि "व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके उन सभी शीलगुणों एवं विशेषताओं का एकीकरण है, जिसमें से कुछ की चेतना उसे रहती है, कुछ की चेतना नहीं रहती है परन्तु उनका आंशिक प्रभाव उसके उसके व्यवहार पर पड़ता है, तथा कुछ दूसरे व्यक्तियों के लिए दृष्टिगोचर होते हैं।"

Robbins (रोबिन्स) (2005) ने भी इस परिभाषा का समर्थन किया है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएं स्पष्ट होती है—

1. Personality व्यक्ति के विभिन्न गुणों का संगठित एवं गतिशील संगठन है।
2. Personality का विकास अनवरत रूप से होता रहता है।
3. Personality व्यक्ति के दृष्टिकोणों, आदतों, रुचियों एवं लक्षणों का संगठन है।
4. Personality व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार, प्रतिमान तथा, इसकी विशेषताओं का योग है।
5. Personality वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करता है।
6. यह जन्मजात एवं अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।
7. व्यक्तित्व में आत्म चेतना होती है।
8. समाज से अलग व्यक्ति के व्यक्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती, अतः इसमें सामाजिकता होती है।
9. अच्छे व्यक्तित्व के लिए उत्तम शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य होना अत्यंत आवश्यक है।

—

Determinants of Personality (व्यक्तित्व के निर्धारक)

इस सम्बंध में दो प्रकार के विचार हैं। एक विचार यह है कि व्यक्तित्व विकास का आधार heredity (आनुवंशिकता) है और दूसरा विचार यह है कि इसका आधार Environment है। पहले विचार के अनुसार व्यक्तित्व के निर्माण में केवल heredity का हाथ होता है, Environment का नहीं। इसके विपरीत दूसरे विचार के अनुसार व्यक्तित्व निर्माण में केवल वातावरण का हाथ होता है, heredity का नहीं। आधुनिक मनोवैज्ञानिक इस विचार से सहमत हैं कि व्यक्तित्व के निर्माण में Environment तथा heredity दोनों का ~~योगदान~~ योगदान है, परन्तु इनके relative importance को लेकर आज भी विवाद है। व्यक्तित्व विकास पर heredity का अधिक प्रभाव पड़ता है या Environment का इस संबंध में आधुनिक मनोवैज्ञानिकों में भी सहमति नहीं है। अतः अपनी ओर से कोई ~~निश्चय~~ निश्चित निष्कर्ष देने से पहले इन दोनों निर्धारकों की अलग-अलग व्याख्या आवश्यक है। —

(A) Biological Determinants of Personality

जैविक निर्धारकों का तात्पर्य उन factors से है, जो hereditary होते हैं। इस factors का निर्धारण वातावरण से नहीं, बल्कि आनुवंशिकता से होता है। इनका प्रभाव व्यक्तित्व-विकास पर अप्रत्यक्ष रूप से (indirectly) पड़ता है। इनके निम्नलिखित प्रकार इस प्रकार हैं —

① **Physique (शारीरिक संरचना)** → शारीरिक संरचना का अर्थ शारीरिक गठन लम्बाई, ढाँचा, आकर्षण आदि से लगाया जाता है। ये सभी शारीरिक शीलगुण (~~Phy~~ (Physical traits) वंशागत होते हैं। उदाहरण के लिए जैसे मनुष्य के बच्चे मनुष्य, पशु के बच्चे पशु तथा पक्षी के बच्चे पक्षी ही होते हैं चाहे वातावरण जैसा भी हो। गोरे माता-पिता के बच्चे अक्सर गोरे तथा काले माता-पिता के बच्चे अधिकतर काले ही होते हैं। लम्बे माता-पिता के बच्चे प्रायः लम्बे होते हैं तथा नाटे माता-पिता के बच्चे अक्सर नाटे ही होते हैं। लेकिन कभी-कभी बच्चों के शारीरिक शीलगुण पर उनकी माता या पिता के पूर्वजों के

2

शीलगुणों का भी प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण उनकी शारीरिक संरचना उनके माता-पिता की शारीरिक संरचना से भिन्न हो जाती है। इसलिए बात यह है कि बच्चे की शारीरिक संरचना माता-तथा पिता की शारीरिक संरचना का प्रायः औसत होती है। जैसे यदि पिता बहुत लम्बा हो और माँ नाटी हो तो उनके बच्चे की शारीरिक संरचना माता तथा पिता की शारीरिक संरचना का प्रायः औसत होती है। Mendel (मेण्डल) ने अपने अध्ययन में देखा कि बिल्कुल उजले तथा काले चूहों से जो बच्चे पैदा हुए उनमें दो बच्चे काले-उजले रंग के थे और शेष दो बच्चे में एक काला तथा एक उजला था।

अब प्रश्न यह उठता है कि व्यक्तित्व के मानसिक शीलगुणों के विकास पर शारीरिक संरचना का प्रभाव किस प्रकार पड़ता है। सुसंगठित एवं आकर्षक शरीर वाले बच्चों के साथ माता-पिता तथा परिवार के अन्य लोग अनुकूल व्यवहार करते हैं। पड़ोसियों, खेल के साथियों, class के साथियों तथा शिक्षकों का व्यवहार भी अनुकूल हुआ करता है। सभी स्तरों पर उनकी प्रशंसा की जाती है। जिसके फलस्वरूप उनके self-confidence, (आत्म विश्वास), बहिर्मुखता (extroversion) सामाजिकता, श्रेष्ठता का भाव आदि विकसित हो जाते हैं। इसके विपरीत, यदि कुरूप, अधिक लम्बे, मोटे तथा विकर्षक शरीर वाले बच्चों के साथ सभी स्तरों पर प्रतिकूल व्यवहार किया जाता है तथा उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। जिसके फलस्वरूप उनमें हीन भाव, संकोच, लज्जा, अन्तर्मुखता, आदि शीलगुण विकसित हो जाते हैं। कभी-कभी ऐसे बच्चे प्रतिक्रियात्मक बनकर बाल-अपराध के शिकार बन जाते हैं। लेकिन कभी-कभी वे क्षतिपूर्ति के रूप में जीवन के किसी क्षेत्र में अपूर्व उपलब्धि प्राप्त ~~करते~~ करते हैं।

(2) **Intelligence** → बुद्धि का प्रभाव भी व्यक्तित्व के विकास पर अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। क्योंकि बुद्धिमान माता-पिता के के बच्चे प्रायः बुद्धिमान होते हैं और मन्द बुद्धि के माता-पिता के बच्चे मन्द बुद्धि के होते हैं। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बच्चे अपनी माता या पिता के पूर्वजों से बौद्धिक योग्यता प्राप्त कर लेते हैं। जिसके कारण उनकी बुद्धि उनके माता-पिता की बुद्धि से बहुत कम या अधिक हो जाती है। कुछ जुड़वाँ बच्चों पर किये गये अध्ययनों से भी इस बात की पुष्टि होती है। Newman (1937) ने एक समान जुड़वा बच्चों

(जेन्सेन)
Jenson (1937)
के I.Q के बीच .88 का correlation पाया। ने आनुवंशिकता तथा बुद्धि के बीच .45 से .97 तक के correlation का वर्णन किया है। Conrad (कॉनरेड) तथा Jones (जॉन्स), (1940) ने माता-पिता तथा उनके बच्चों की बुद्धि के बीच .49 का correlation (सहसंबंध) पाया। इन अध्ययनों से इस बात का भी संकेत मिलता है कि वंशागत होते हुए भी उनकी बौद्धिक योग्यता किस सीमा तक विकसित होगी, यह वातावरण पर आधारित है।

अब देखना यह है कि इस Biological factors का प्रभाव व्यक्तित्व के शीलगुणों के विकास पर किस प्रकार पड़ता है। तीव्र बुद्धि के बच्चों के साथ परिवार, पड़ोस तथा समाज के लोग अनुकूल व्यवहार करते हैं। साथ ही उनकी प्रशंसा करते हैं। उन्हें अपने साथियों के बीच भी सम्मान मिलता है। शिक्षक भी उन्हें प्रशंसा की नजर से देखते हैं जिसके फलस्वरूप उनमें श्रेष्ठता का भाव बहिर्मुखता, आधिपत्य, आत्मविश्वास, आदि शीलगुण विकसित हो जाते हैं। मन्द बुद्धि के बच्चों को उन सभी परिस्थितियों में उपेक्षा तथा निन्दा का सामना करना पड़ता है। इसलिए, उनमें हीन-भाव, दोष भाव (guilt feeling) अन्तर्मुखता आदि शीलगुण विकसित हो जाते हैं।